मानवतावादी भूगोलवेत्ता भूगोल का अध्ययन एक विशिष्ट रीति से करना चाहते हैं जिसमें मानव की सक्रिय तथा केन्द्रीय भूमिका हो, जिसमें मानव विज्ञान, मानव एजेन्सी (Agency), मानव जागरूकता (Analysis) तथा मानव क्रियाशीलता को केन्द्रीय एवं सक्रिय महत्त्व दिया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानवतावादी भूगोलवेत्ता भूगोल का अध्ययन सम्पूर्णता से मानव हित में करना चाहता है। इस विचारधारा का आरंभकर्त्ता इमैनुअल काण्ट (E. Kant) को माना जाता है जिसे अन्य सम्भववादी विचारकों का समर्थन मिला जिसमें फ्रेबे (Febvre) और बिडाल-डी-ला-ब्लाश का नाम शामिल है। अन्य भूगोलवेत्ताओं जिसमें गुल्के (Guelke) एनी बेट्टीमर (Anne Buttimer), ट्वान (Tuan) आदि ने भी अपने विचार दिये।

महिलावादी/नारीवादी भूगोल का विकास 1860 के दशक में पश्चिमी देशों में महिला अधिकारों के लिए संघर्ष आमूल परिवर्तनवादी मार्क्सवादी चिंतनधारा से प्रेरित होकर प्रारम्भ हुआ।

नारीवादी विमर्श में लिंग-भेद (जेण्डर) का तात्पर्य स्त्री और पुरूष के कर्तव्यों और अधिकारों में पाए जाने वले सामाजिक व्यवस्थाजन्य विभेदों से है और यौन (sex) शब्द का तात्पर्य स्त्री-पुरुष के बीच जैविक संरचना संबंधी अन्तर से है।

नारीवादी चिंतन को दो भागों में विभाजित किया गया है :- पहला उग्र नारीवादी दृष्टिकोण (Radical Feminism) और दूसरा सामाजिक नारीवादी दृष्टिकोण (Social Feminism)।

उग्रवादी विचारक के अनुसार पितृ प्रधान व्यवस्था के कारण ही महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से पुरूषों पर निर्भर रहना पड़ता है और समाज में उसे गौण स्थान प्राप्त होता है। लड़कियों को बचपन से ही कम आजादी का अवसर प्राप्त होता है जैसे उसे लड़कों की अपेक्षा खेलने-कूदने और घूमने-फिरने का अवसर बहुत कम मिलता है।

इसके विपरीत सामाजिक नारीवादी चिंतक पितृ प्रधान व्यवस्था ही स्त्रियों की वर्तमान चिंताजनक अवस्था का अन्तिम कारण है को नकारते हुए समाज में व्याप्त अन्य प्रकार के विरोधाभाषों, अन्तर द्वन्द्वों और विकृतियों का एक अंग मानते हुए महिलाओं की समस्या का सर्वांगीण अध्ययन के पक्षधर हैं।

जहाँ तक मानवतावादी भूगोल और नारीवादी भूगोल के सम्बन्ध का प्रश्न है तो यह भी भूगोल के क्षेत्रीय विश्लेषण पर आधारित विज्ञान की संकल्पना के विरूद्ध है।

नारीवादी अध्ययन पद्धति गहन साक्षात्कार, उपन्यासों और अन्य साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं और सामान्यतया गुणात्मक सूचनाओं (Qualitative Data) पर जोर देती है।

5.13 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

Q.1. मानवतावादी भूगोल (Humanistic Geography) से क्या समझते हैं?

Q.2. मानवतावादी विचारधारा का विकास एवं उसके सार का वर्णन करें।

Q.3. मानवतावादी भूगोल की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

Q.4. नारीवादी भूगोल/महिलावादी भूगोल (Gender/Feministic Geography) का वर्णन करें।

Q.5. मानवतावादी चिंतन से किस प्रकार नारीवादी भूगोल संबंधित हैं, इसकी व्याख्या करें।

Q.6. नारीवादी भूगोल क्या है? इसके प्रकारों की व्याख्या करें।

5.4 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Fundamentals of Geographical Thought : Sudeepta Adhikari.
2. भौगोलिक चिंतन कीसमीक्षा : डॉ० देवेन्द्र प्रसाद सिंह
3. भौगोलिक चिंतन : माजिद हुसैन
4. भौगोलिक चिंतन : दीक्षित

●●●

मानव भूगोल का अर्थ, परिभाषा एवं विषय क्षेत्र
(Meaning, Definition and Scope of Human Geography)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objective)
1.1 परिचय (Introduction)
1.2 मानव भूगोल का अर्थ (Meaning of Human Geography)
1.3 मानव भूगोल की परिभाषा (Definition of Human Geography)
1.4 मानव भूगोल का क्षेत्र (Scope of Human Geography)
1.5 निष्कर्ष (Summuing up)
1.6 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)
1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)
1.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को मानव भूगोल के अर्थ, परिभाषा एवं विषय-क्षेत्र की जानकारी प्रदान करनी है। इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् छात्र जान सकेंगे :-

- मानव भूगोल के अर्थ,
- मानव भूगोल की परिभाषा, उद्देश्य एवं
- मानव भूगोल का विकास एवं विषय-क्षेत्र।

1.1 परिचय (Introduction)

मानव पृथ्वी का महत्त्वपूर्ण प्राणी है। वह पार्थिव वस्तुओं से प्रभावित होकर उन्हें भी अपने कार्यों से प्रभावित करता है, उनमें यथोचित परिवर्तन लाता है, और प्रकृति को अपने अनुकूल बना लेता है या इससे सामंजस्य स्थापित करता है। मानव एवं वातावरण का अटूट सम्बन्ध है। माना जाता है कि भूगोल यह विज्ञान है जिसमें मानव, वातावरण एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल, भूगोल की महत्त्वपूर्ण शाखा है।

1.2 मानव भूगोल का अर्थ (Meaning of Human Geography)

भूगोल में जहाँ पृथ्वी एवं पृथ्वी से सम्बन्धित पार्थिव वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है, वहीं मानव भूगोल में मनुष्य और इन पार्थिव वस्तुओं के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। किसी प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियाँ, भू-रचना, जलवायु, जलराशि, वनस्पति, खनिज सम्पत्ति, जीव-जन्तु आदि का मानव के रहन-सहन, कार्य-कलापों एवं आचार-विचारों पर क्या प्रभाव पड़ता है और मानव किस प्रकार इन भोगोलिक तत्त्वों को अपने कार्यों के लिए उपयोग में लाता है, इन सम्पूर्ण तथ्यों का समास्टिगत अध्ययन मानव भूगोल में ही किया जाता है।

पृथ्वी पर निवास करने वाले **विभिन्न प्रदेश**, उष्ण, शीत या समशीतोष्ण कटिबन्धीय निवासियों की शारीरिक रचना, जातीय गुण, कार्यक्षमता-**योग्यता, आ**चार-विचार, धार्मिक विश्वास रहन-सहन आदि में अनेक विभिन्नताएँ मिलती है। इन विभिन्नताओं का कारण वह विशेष वातावरण है, जिसमें मानव रहता है। अत: मानव भूगोल एक क्रमबद्ध विश्लेषण उपस्थित करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मानव किस प्रकार अपने भौतिक वातावरण से प्रभावित होता है और किस प्रकार वह उसके प्रति प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करता है एवं किस प्रकार वह उससे समन्वय या संघर्ष करता है। मनुष्य अन्य जीव-जन्तुओं की सहायता से प्राकृतिक दृश्यों का उपयोग कर कृत्रिम या सांस्कृतिक वातावरण को जन्म देता है। इसी के फलस्वरूप धरातल पर अनेक सांस्कृतिक स्वरूप दृष्टिगोचर होते हैं- मकान, बस्तियाँ, नगर गाँव, रेल, सड़क, मार्ग बन्दरगाह, उद्योग कारखाने इत्यादि।

1.3 मानव भूगोल की परिभाषाएँ (Definitions of Human Geography)

मानव भूगोल की परिभाषाएँ एवं व्याख्या भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से की है। कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएँ :-

वीडाल डी ला ब्लाश - फ्रांसीसी विद्वान प्रो० वीडाल डी ला ब्लाश के अनुसार मानव भूगोल पृथ्वी एवं मानव के पारस्परिक सम्बन्धों का एक नया विचार देता है, जिसमें पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों का तथा पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवों के पारस्परिक सम्बन्धों का सह ज्ञान उपलब्ध होता है।

प्रो० हंटिंगटन - अमरीकी भूगोलवेत्ता प्रो० हंटिंगटन के अनुसार- मानव भूगोल भौगोलिक वातावरण एवं मनुष्य के कार्यकलाप एवं गुणों के पारस्परिक सम्बन्ध के स्वरूप एवं वितरण का अध्ययन है।

रैटजेल - मानव भूगोलशास्त्री जर्मन विद्वान रैटजेल के अनुसार- मानव भूगोल के दृश्य सर्वत्र वातावरण से सम्बन्धित होते हैं, जो स्वयं भौतिक दशाओं का एक योग होता है।

कुमारी सैम्पुल - रैटजेल की शिष्या अमरीकी भूगोलवेत्ता सैम्पुल के अनुसार- यह क्रियाशील मानव एवं अस्थायी पृथ्वी के परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन है।

प्रो० जीन्स ब्रून्स - फ्रांसीसी विद्वान एवं ब्लाश के शिष्य प्रो० जीन्स ब्रून्स के अनुसार- मानव भूगोल उन सभी तथ्यों का अध्ययन करते हैं जो मानव के क्रिया-कलापों से प्रभावित है और जो हमारी पृथ्वी के धरातल पर घटित होने वाली घटनाओं में से छाँटकर एक विशेष श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

डिमांजियाँ - फ्रांसीसी विद्वान डिमांजियाँ के अनुसार- मानव भूगोल मानव समूहों एवं मानव समाजों का अध्ययन उनके प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्ध के सन्दर्भ में करता है।

डा० डेविस - डा० डेविस के अनुसार- मानव भूगोल मुख्यत: प्राकृतिक वातावरण और मानव के क्रिया-कलाप दोनों ही के पारस्परिक सम्बन्ध और उस सम्बन्ध के परिणामों के पार्थिव स्वरूप की खोज है अथवा प्राकृतिक वातावरण के नियंत्रण को उनके आधार के रूप में सिद्ध करने का प्रयास है।

सी०एल०व्हाइट एवं जी०टी०रेनर - अमरीकी भूगोलवेत्ता व्हाइट और रेनर के अनुसार- मानव भूगोल मनुष्य एवं प्रकृति के अन्त:संबंधों का अध्ययन है।

प्रो० मैक्सीमिलयन सार - फ्रांसीसी विद्वान मैक्स सोर के अनुसार- मानव भूगोल का उद्देश्य मनुष्य को एक ऐसा जैविक प्राणी मानकर उसका अध्ययन करना है जो प्रकृति द्वारा पूर्व निर्धारित दशाओं में रहता है तथा प्राकृतिक वातावरण से प्राप्त उद्दीपनों से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

जे०जी०एच० लेबान - ब्रिटिश भूगोलवेत्ता लेबान के अनुसार- मानव भूगोल विस्तृत स्वरूप वाला एक समाष्टि भूगोल है, जिसके अन्तर्गत मानव एवं उसके वातावरण के बीच के सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली सामान्य समस्या का स्पष्टीकरण किया जाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्वानों के विचारों में मतभेद होते हुए भी मानव भूगोल के अर्थ तथ्यों के बारे में एक समानता अवश्य मिलती है कि मानव भूगोल मनुष्य एवं उसके वातावरण के अन्त:सम्बन्धों से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करता है। मनुष्य मानव भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है, मानव भूगोल का अर्थ एवं विषय-वस्तु स्पष्ट करने में फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं की प्रमुख भूमिका रही है। वीडाल डी ला ब्लाश, जीन ब्रून्स, डिमांजिया तथा मैक्ससोर भूगोल के संस्थापक कहे जाते हैं। इन विद्वानों के अनुसार मानव भूगोल मनुष्य की क्रियाओं तथा प्राकृतिक प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पृथ्वी की सतह पर होने वाले परिवर्तनों से सम्बन्धित है।

हंटिंगटन महोदय ने मानवीय क्रियाकलापों के साथ मानवीय गुणों पर बल दिया। व्हाइट एवं रेनर ने मानव परिस्थैतिकी के दृष्टिकोण को मानव भूगोल में समाहित करने का प्रयास किया है। मानव भूगोल का मूल मन्त्र यह है कि मनुष्य की सभी क्रियाओं पर वातावरण का प्रभाव पड़ता है और वह स्वयं भी अपनी क्रियाओं द्वारा विकास के साथ-साथ उसमें उत्तरोत्तर परिवर्तन करता है। अत: अम मानव भूगोल को निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं- मानव भूगोल मानव विकास के विभिन्न चरणों में उस पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभावों का एक आदर्श अध्ययन है। यह मानव एवं उसके भौतिक वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन है।

मानव भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी पर व्याप्त विविध पर्यावरणीय परिस्थितियों में उपलब्ध भौतिक संसाधनों के उपयोग से रचित सांस्कृतिक भूदृश्यों की सार्थक व्याख्या करना है। मानव भूगोल के अध्ययन केन्द्रीय बिन्दु मानव समाज है जिसकी संख्या, आर्थिक क्रिया-कलाप, मानव गृह अधिवास, सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ, आवागमन के साधन और पर्यावरणीय समायोजन जैसे पक्षों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार मानव भूगोल का उद्देश्य मानव एवं पर्यावरण के मध्य परस्पर कार्यात्मक सम्बन्धों की व्याख्या प्रादेशिक आधार पर किया जाना है। इसके लिए तीन पक्षों के अर्न्तसम्बन्धों प्राकृतिक वातावरण सांस्कृतिक परिवेश और प्रादेशिक व्यवस्था का मूल्यांकन आवश्यक होता है।

1.4 मानव भूगोल का विषय क्षेत्र (Scope of Human Geography)

मानव भूगोल का विषय क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। मानव भूगोल में मनुष्य एवं उसकी विभिन्न अनुक्रियाओं का परस्पर अध्ययन किया जाता है, जिससे इसका कार्यक्षेत्र वृहत् है। मानव भूगोल में मानव प्रजातियों, विश्व के विभिन्न भागों में जनसंख्या का विकास, वितरण एवं घनत्व, जनसांख्यिकी के लक्षण, जन-स्थानान्तरण के प्रतिमान और मानव-समूहों तथा उनकी आर्थिक क्रियाओं में भौतिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अध्ययन होता है। इसमें मानव एवं पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों, मानवीय अनुक्रिया के वितरण का, ग्रामीण भूगोल, नगरीय भूगोल का भी अध्ययन किया जाता है। इसमें मानव की आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्रीय वितरण, उद्योग-धंधे, व्यापार, परिवहन तथा संचार पद्धति इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल का सम्बन्ध सम्पूर्ण विश्व से है। मानव भूगोल में भूगोल के वे सभी विषय समाहित है जो प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित है। मानव भूगोल की विषय-वस्तु सभी सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण करती है, क्योंकि यह उन विज्ञानों की क्षेत्रीयता एवं क्रमबद्धता का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसका उनमें अभाव होता है। मानव भूगोल अपने उप क्षेत्रों जैसे व्यवहारवादी, राजनैतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक भूगोल में विश्लेषण हेतु अन्य सामाजिक विज्ञानों से सहयोग प्राप्त करता है एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों को अपने उद्देश्य से सहायता भी प्रदान करता है। समाजों, संस्कृतियों एवं विश्व के विभिन्न प्रदेशों में मानव निर्मित भूपटलों में विरोधाभास का स्पष्टीकरण भी मानव भूगोल द्वारा किया जाता है। मानव भूगोल का अध्ययन हमें बेहतर जानकारी रखने वाला नागरिक बनाने में सहयोग करता है। मानव भूगोल द्वारा क्षेत्रीय तंत्र का विश्लेषण प्रतिस्पर्द्धात्मक विश्व में हमें अपने समाज की वास्तविकता एवं उसके परिदृश्य से अवगत कराता है।

अनेक भूगोलवेताओं ने मानव भूगोल के क्षेत्र को अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रतिपादित किया है। कुछ प्रमुख विद्वानों के दृष्टिकोण-

डा० हंटिगंटन का मत :- अमेरिकन विद्वान डा० हंटिगंटन ने मानव भूगोल के विषय-क्षेत्र को दो भागों में वर्गीकृत किया।

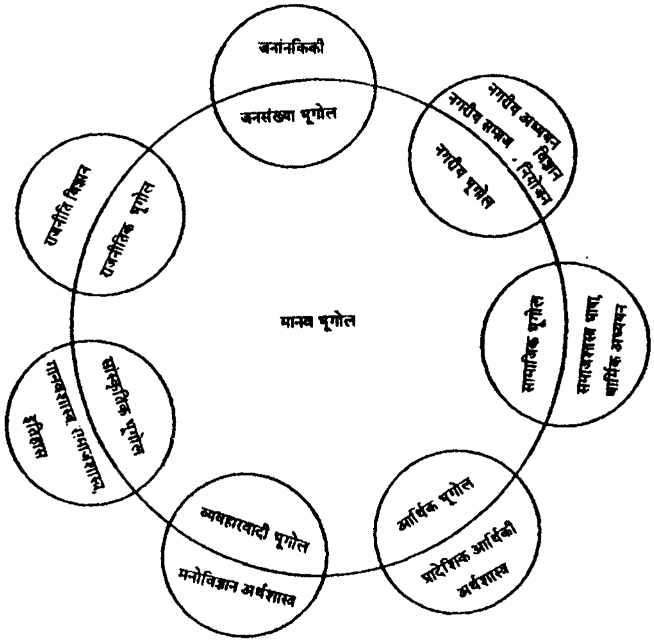

चित्र-1.1 : मानव भूगोल के उपक्षेत्र

(1) भौतिक दशाएँ एवं (2) मानवीय अभिव्यंजना।

(1) भौतिक दशाएँ (Physical Conditions) - इसके अन्तर्गत

- पृथ्वी के ग्रह सम्बन्ध अर्थात् उसकी स्थिति स्वरूप एवं आकार।
- स्थल स्वरूप एवं संरचना
- जलाशय
- मिट्टियाँ एवं खनिज
- जलवायु

इस श्रेणी में जीवन के विभिन्न रूपों को भी सम्मिलित किया गया है, जिसकी तीन श्रेणियाँ बनायी गयी है- (i) पौधें, (ii) पशु एवं (iii) मनुष्य।

(3) मानवीय अभिव्यजना (Human Response) - इसके अन्तर्गत मानव की :-

- प्राथमिक आवश्यकताएँ - भोजन, जल, वस्त्र, सुरक्षा इत्यादि।
- मूल या मुख्य व्यवसाय - शिकार करना, पशु चराना, निर्माण इत्यादि।
- चातुर्य या क्षमता - पैतृक देन स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक उद्यीपन
- उच्च आवश्यकताएँ - आमोद-प्रमोद, शिक्षा, विज्ञान, कला, इत्यादि।

प्रो० विडाल डी ला ब्लाश का मत - प्रो० ब्लाश ने भूगोल के क्षेत्र में छः (6) तथ्यों को सम्तिलित किया है-

(i) पृथ्वी के भूदृश्यों की एकता,

(ii) उनका परिवर्तनशील संयोग एवं परिमार्जन,

(iii) वातावरण की विभिन्न शक्तियाँ एवं मानव का प्रयास,

(iv) प्राकृतिक सांस्कृतिक दृश्यों के विश्लेषण हेतु वैज्ञानिक आवश्यकता,

(v) मानव द्वारा प्राकृतिक वातावरण का परिमार्जन, एवं

(vi) पृथ्वी पर व्याप्त सभी तथ्यों का भूगोल से सम्बन्ध।

प्रो० ब्लाश ने मानव भूगोल की विषय-सामग्री तीन भागों में वर्गीकृत किया है-

(i) जनसंख्या, (ii) सांस्कृतिक तत्त्व एवं (iii) परिवहन।

प्रो० ब्रूंस का मत :- प्रो० ब्रून्स ने मानव भूगोल की विषय-सामग्री को निम्न दो आधारों पर वर्गीकृत किया है-

(i) सभ्यता के विकास के आधार पर एवं

(ii) सांस्कृतिक तथ्यों के आधार पर।

(i) सभ्यता के विकास के आधार पर मानव भूगोल को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है। अनिवार्य आवश्यकताओं की भूगोल,

- भूमि शोषण अथवा विदोहन-सम्बन्धी भूगोल,
- सामाजिक भूगोल एवं
- राजनीतिक एवं ऐतिहासिक भूगोल।

(ii) सांस्कृतिक तथ्यों के आधार पर मानव भूगोल को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

- भूमि के अनुत्पादक व्यवसाय सम्बन्धी तथ्य,
- पशु और वनस्पति पर मानव की विजय सम्बन्धी तथ्य एवं
- विध्वंसात्मक आर्थिक तथ्य।

प्रो० ह्वाइट एवं रैनर का मत :- इन्होंने मानव भूगोल के विषय-क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित किया है-

- सामाजिक आँकड़े जो मानवीय क्रियाओं से उत्पन्न होते हैं,

- भौतिक तत्त्व जिनकी उत्पत्ति प्राकृतिक निधियों से होती है, एवं
- पारस्परिक सम्बन्धों का प्रभाव जो एक-दूसरे पर पड़ता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मानव भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों के भौगोलिक वातावरण एवं निरन्तर विकासशील, एवं गतिशील मानव समूहों के अन्तर्सम्बन्धों में क्रिया-प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इस दृष्टि से मानव भूगोल का क्षेत्र व्यापक बन जाता है। अतः इसमें छः तथ्यों पर विशेष बल दिया जाता है-

1. मानव भूगोल का अर्थ, क्षेत्र उसके तथ्य, उसके सिद्धांत, उसका विकास एवं सामाजिक विज्ञानों से उसका सम्बन्ध।
2. प्राकृतिक वातावरण के विभिन्न अवयवों का मानव के क्रिया-कलापों पर प्रभाव एवं उनसे सम्बन्ध।
3. मानव का उद्‌गम क्षेत्र, मानव का प्रजातियाँ और उनका वितरण।
4. जनसंख्या वितरण घनत्व, विकास, समस्याएँ, प्रवास आदि,
5. मानव अधिवास बस्तियाँ-ग्रामीण एवं नगरीय, परिवहन के साधन आदि।
6. मानव की अर्थव्यवस्थाएँ।

संक्षेप में, मानव भूगोल का क्षेत्र वस्तुतः उसके आवास के परिवेश, वहाँ उसके द्वारा सृजित कार्य-कलाप एवं संरचनाएँ एवं इन सबके कारण विकसित विशिष्ट समाज के व्यापक रूप में अध्ययन में निहित है, इनके अतिरिक्त मानव भूगोल में मानव समूहों के सामाजिक संगठन, साहित्य, कला, धार्मिक विश्वास, मनोरंजन, लोक साहित्य आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल का दृष्टिकोण अब मानव कल्याण की ओर उन्मुख हुआ है। पूर्व काल से भूगोल का अध्ययन मनुष्य अपने ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए करता रहा है। वर्तमान युग में अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह भूगोल का अध्ययन भी मानव कल्याण हेतु किया जाता है। समता एवं सामाजिक न्याय मानव भूगोल के प्रमुख विषय-वस्तु बनते जा रहे हैं। मानव भूगोल सही ढंग से उदार शिक्षा का उद्देश्य पूरा करता है।

1.5 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मानव भूगोल, भूगोल की महत्त्वपूर्ण शाखा है। मानव भूगोल में मनुष्य एवं इन पार्थिव वस्तुओं के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। भूगोल की तरह ही मानव भूगोल को भी अनेक विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव भूगोल मानव विकास के विभिन्न चरणों

में उस पर पड़ने वाले भोगोलिक प्रभावों का एक आदर्श अध्ययन है। यह मानव एवं उनके भौतिक वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन है।

मानव भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी पर व्याप्त विविध पर्यावरणीय परिस्थितियों में उपलब्ध भौतिक संसाधनों के उपयोग से रचित सांस्कृतिक भूदृश्यों की सार्थक व्याख्या करता है। मानव भूगोल का विषय-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, क्योंकि इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण विश्व से है। यह सभी सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण करती है। मानव भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों के भौगोलिक वातावरण एवं निरन्तर विकासशील एवं गतिशील मानव-समूहों के अन्तर्सम्बन्धों एवं क्रिया-प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

वर्तमान समय में मानव भूगोल का क्षेत्र मानव कल्याण की ओर उन्मुख हो गया है। अब इसका विषय-क्षेत्र मानव, मानव-पर्यावरण एवं मानव कल्याण की ओर उन्मुख हो गया है। अब इसका विषय-क्षेत्र मानव, मानव-पर्यावरण एवं मानव कल्याण समागम भी है।

1.6 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

मानव भूगोल :- मानव भूगोल, भूगोल की महत्वपूर्ण शाखा है जिसके अन्तर्गत मानव एवं उसके प्राकृतिक पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है।

मानव परिस्थैतिकी :- जब मनुष्य का सामाजिक प्राणी के रूप में, प्रकृति के जैव-अजैव घटकों के साथ परस्पर अन्तप्रक्रिया के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता है तो उसे 'मानव परिस्थैतिकी' कहा जाता है। अर्थात् मानव एवं प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या मानव परिस्थैतिकी है।

1.7 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

(1) मानव भूगोल के अर्थ, परिभाषा को स्पष्ट करते हुए इसके विषय-क्षेत्र की विवेचना करें।

(2) मानव भूगोल की परिभाषित कीजिए एवं इसके विषय-क्षेत्र की विवेचना प्रस्तुत करें।

1.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. नाजिद हुसैन : मानव भूगोल
2. बी०एन० सिंह : मानव भूगोल
3. सी० मामोरिया : मानव भूगोल
4. श्रीवास्तव एवं राव : मानव भूगोल
5. एस० डी० कौशिक : मानव भूगोल
6. L. R. Singh : Fundamentals of Human Geography
7. Fellmen : Human Geopgraphy

●●●

मानव का उद्भव एवं विकास
(Evolutions and Development)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

2.0 उद्देश्य (Objective)
2.1 परिचय (Introduction)
2.2 जैव पढानुक्रम (Hierarchy of Species)
2.3 मानव के पूर्वज (Ancestors of Man)
2.4 मानव का विकास (Development of Man)
2.5 मानव विकास के चरण (Stages of Development of Man)
2.6 निष्कर्ष (Summing up)
2.7 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)
2.8 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)
2.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

2.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को मानव की उत्पत्ति के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे :-

1. पृथ्वी पर जीवों के विकास अर्थात् जैव पठानुक्रम को,
2. मानव के पूर्वज, विकास चरण अवस्थाओं को,
3. मानव की उत्पत्ति अवस्थाओं के साथ-साथ उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं को भी तथा,
4. पृथ्वीतल पर मानव के उद्भव एवं प्रसार को।

2.1 परिचय (Introduction)

मानव की उत्पत्ति कैसे हुई, यह सदैव चिंतन का विषय रहा है। आरंभ में मानव की उत्पत्ति और विकास से संबंधित जो विचार प्रस्तुत किए गए, वे हमें प्राचीन धार्मिक विश्वासों के रूप में देखने को मिलते हैं, पर ये धार्मिक विश्वास वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित नहीं है।

19वीं शताब्दी में चार्ल्स डर्विन ने अपनी पुस्तक 'ओरिजन ऑफ स्पीसीज' में उद्विकासीय सिद्धान्त को विद्वानों ने समर्थन किया, क्योंकि कई प्रमाण इस सिद्धान्त के समर्थन में मिले। चट्टानों के स्तरों के बीच मिलने वाले जीवाश्मों ने जीवन विकास के क्रम को प्रमाणित किया।

'रूपान्तरण का सिद्धान्त', 'अनुकूलन का सिद्धान्त' एवं 'प्राकृतिक चयन के सिद्धान्त' के आधार पर ही जीवों का विकास हुआ। यही उद्विकास का नियम मनुष्य के उद्विकास पर भी लागू होता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त मानवाशेषों जो कि कंकाल, हड्डियों, दाँत आदि के रूप में प्राप्त हुए हैं, वे मानव के उत्थान से वर्तमान स्थिति तक की कहानी को अस्पष्ट रूप में कहते हैं, क्योंकि गीच की कुछ कड़ियाँ अर्थात् अवशेष मिले हैं, उनके आधार पर मानव के उद्विकास की कहानी, व्याख्या करने का प्रयास विभिन्न मानव शास्त्रियों एवं मानव भूगोलवेत्ताओं ने किया है।

2.2 जैव पढानुक्रम (Hierarchy of Species)

जैव पढानुक्रम में मनुष्य, पशु, वनस्पति आदि को एक क्रम से रखा जाता है, जो निम्नवत् हैं-

जगत	-	पशु-पौधे
संघ	-	रीढ़धारी पशु, पौधे
वर्ग	-	स्तनधारी पशु, बीज वाले पौधे
श्रेणी	-	प्राइभेट लंगूर, वानर, मनुष्य
परिवार	-	मनुष्य, गुलाब के पौधे,
वंश	-	मानव, गुलाब
जाति	-	मानव प्रजाति, गुलाब।

पृथ्वी पर लगभग 3,50,000 पौधों की प्रजातियाँ तथा 6000 स्तनधारी पशुओं की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। प्लीस्टोसीन युग में पौधों एवं पशुओं का ऐसा आधारी भौगोलिक वितरण अस्तित्व में आ गया था जो पृथ्वी के इतिहास की शांत अवस्थाओं में उत्पन्न हुआ था। इसके बाद अनेक पर्वत निर्माणकारी हलचले हुईं तथा पृथ्वी के अनेक भागों एवं समुद्रों से निमज्जन एवं उन्मज्जन होता रहा, इस तरह जीवों के क्षेत्र स्थानान्तरित होते रहते थे। इन भौगोलिक हलचलों के चलते मानव अस्तित्व के बनते बिगड़ते विकास क्रम को तथ्यगत बनाना कठिन कार्य है।

सर्वप्रथम एक कोशकीय प्राणियों का उद्भव आर्कियोजोइक महाकल्प में हुआ। पेल्योजोइक महाकल्प के भिन्न कल्पों में मछलियों, उभयचर प्राणियों एवं सरीसृपों का विकास हुआ। मेसोजोइक महाकल्प में विशाल डायनासोरों का उद्भव हुआ। इसी समय प्रथम स्तनपाई एवं पक्षियों का भी उद्भव हुआ। सेनोजोइक महाकल्प के ओलिगोसीन युग में आधुनिक स्तन्य प्राणियों एवं प्राइमेटों का विकास हुआ। अपने उद्भव से आज तक भिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में स्वयं को ढालते हुए आधुनिक मानव के रूप में आ चुका है। ये परिवर्तन विभिन्न सोपानों से होकर गुजरे हैं।